International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 6; November 2016; Page No. 63-65

पंथी–गीत में अभिव्यक्त सत्यानुभूति : संत गुरू घासीदास जी

प्रो. राजकुमार लहरे

सहायक प्राध्यापक हिन्दी, शासकीय पी डी वाणिज्य एवं कला महाविद्यालय रायगढ़ छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

मुगल, अंग्रेजी तथा देशी राजव्यवस्था से भारतीय समाज दुर्दशा का पर्याय हो गया था। लोग राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक स्तर में अपने आप को बँधा, कमजोर व निःसहाय महसूस करने लगा था। शिक्षित वर्ग अपनी श्रेष्ठता के लिए जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, धर्म, वर्णभेद के आडम्बर में घिरे थे और ''साहित्य समाज का दर्पण होता है'' का स्वार्थपूर्ण व्याख्या करने लगे थे। जिससे सामान्य जनजीवन दिक्भ्रमित व अस्त–व्यस्त हो गया था। ऐसी परिस्थिति में छत्तीसगढ़ प्रांत में राज व समाज को एक सही दिशा देने के लिए सन् 18 दिसंबर 1756 दिन सोमवार (चंद्रवार)–1850ई0[1]. को तत्कालीन सोनाखान अंचल के गाँव गिरौदपुरी, जो वर्तमान में जिला–बलौदाबाजार–भाटापारा, छत्तीसगढ़ में स्थित है। महँगु–अमरौतिन के घर एक बालक का जन्म हुआ। ''होनहार बिरवान के होते चिकने पात'' को चरितार्थ करता हुआ विलक्षण प्रतिभा के धनी गुरु बाबाघासीदास जी सत्य के गुणधर्म से समाज को अवगत कराया। तथा लोगों को ज्ञान, ध्यान, योग के सहारे सत्य को प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। इन्होंने सत्य ही ईवर है, सादा जीवन उच्च विचार तथा मानव मानव एक समान कहा। सत्य को वैज्ञानिक सोच के अनुरुप तर्कसंगत व ज्ञानपूर्ण बताया। जिससे स्थानीय से वैश्विक तक वर्तमान का सर्वांगीण विकास व समसामयिक समस्याओं का निदान संभव है। सतनाम ही सृष्टि का बीज–मंत्र है।

मूलशब्द: सतनाम, पंथ, ज्ञान, मार्ग, जैतखाम, आरती, जीव, योग, अहिंसा, गिरौदपुरी–सतनामियों का पवित्र स्थान।

प्रस्तावना

सतनाम का स्वरुप

सतनाम में 'सत' सनातन, शाश्वत, पूर्ण, अमर, अविरल प्रवाहमान ब्रम्हाण्डों का पूर्णत्व रुप है। जो समय के साथ चार युगों में एक युग– सतयुग रहा। तथा शेष– त्रेतायुग, द्वापर युग एवं कलयुग में सत क्रमशः कम होता गया। सभी साहित्य वाद, दर्शन, आदर्श, आविष्कार, धर्म व संवेद्य भावों का मूल सत है। सत का अस्तित्व उत्पत्ति से सम्बध्द व सर्वकालिक समभाव, सभी सभ्यता के विकास के द्योत्तक, ब्रम्हाण्ड के ज्ञात–अज्ञात, सम्पर्क–असम्पर्क, अज्ञोंव विज्ञों का जीवन पुँज है। यही सत सभ्यता– हिन्दू , बौध्द, जैन, सिख, इसाई, या कोई अन्य, ज्ञात–अज्ञात धर्म का मूल स्त्रोत है; जो सेवा, अहिंसा, संयम, त्याग, संतोष, आनंद के रुप में परिलक्षित होकर विभिन्न चरित्र–चित्रण से जड़–चेतन तथा विभन्न रुपाकारों में दृश्य–अदृश्य जगत में व्यक्त हो रहा है। जिसके ज्ञाता को क्रमशः आदमी, मनुष्य, साधु, संत, महात्मा, भगवान, ईश्वर–परमेश्वर लोकजन सहज पदासीन करते हैं; तो क्या, पशुओं या अन्य जीवधारियों में भी यही नहीं होता होगा ?

'नाम' से तात्पर्य होता है– वह संकेत जो सभी परिस्थति में एक गुणधर्म, एकाकार तथा यथार्थ हो। जो सत के भाव गाम्भीर्य को वहन कर सूत्रात्मक रुप में व्यक्त कर सके। अतः वह दृश्य–अदृश्य जगत को पूर्णता के साथ संवेद्यमयी अभिव्यक्त कर सके। जब सत एक संमयित व्यवस्था दे और व्यवस्था को पूर्णता दे तो वह निश्चय ही सत के अनुरुप हो सकता है, और व्यवस्था ही धर्म है। जिससे जीवधारियों का सर्वांगीण विकास हो सके। और यही व्यवस्था सभी काल, रुप में रुपायित हो तो विकास है। नहीं तो अधर्म, पाप, दुःख के हेतू. इस तरह से सतनाम धर्म सभी धर्म, सम्प्रदाय, वर्ग, जाति, रंग–रुप के मूल स्त्रोत है। जिससे ही ब्रम्हाण्ड़ों का अस्तित्व है– जीवन का सार। सत का अक्रमत्व ही दुःख है। जिससे अणु, परमाणु, पदार्थ, आदि विपरीत गतिमान हो जाता है और यही असत्य है।

सतनाम संकेत, श्रूति व लेखन माध्यम से जड़–चेतन रुप में रुपायित हो रहा है। सत्य मानव सभ्यता के साथ–साथ अंतर्बोध हुआ है–

सत्यनाम पेड़ है, निरंजन बनगे डार।
तीन देव शाखा बने, पत्र बने संसार।।

–बाबा गुरु घासीदास

सत्य से ही दुनिया दृश्यमान व चालित है, जो प्राचीन काल से बोधकथा–कथांतर में उद्घाटित होता रहा है। कालांतर में लेखन आने से सद् साहित्य के रुप में प्रकट हुआ, और कल्पना सत्य के प्रगटीकरण व साधारणीकरण में सहायक रहे हैं।

गीता उपदेश में श्रीकृष्ण अर्जुन से कहता है– कुरुक्षेत्र में अंततः जीत सत्य की होगी; और हुआ भी। मुण्डकोपनिषद में 'सत्यमेवजयते' स्पष्ट व्यक्त हुआ है। धर्मचक्र प्रर्वतन में सत्य और अहिंसा काव्यवहारिक रुप ही प्रर्वतन हुआ है। बाइबिल का सार 'पवित्र आत्मा' कुछ और नहीं वरन् आत्मा का सत्यमय रुप ही है। सत्य को धारणीय क्षमता के अनुकूल अपनाने पर वह धर्म हो जाता है। बाद में कुछ लोगों ने सत्य का विविध रुपों में व्याख्या किये, जिससे विभिन्न कुल, जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, धर्म, विविध आधार पर, क्षेत्र, रंग–रुप, में बॉटा, जिसका मूल उद्देश्य ज्ञानियों का अपना स्वार्थ सिध्द करना रहा है। जोकि आज विभिन्न मत–मतांतर में जीविका के साधन बना लेने से सत्य का सही स्वरुप प्रगट नहीं हो सका। और आज यही सब रोटी, कपड़ा, मकान के साधन के रुप में हो गया है।

इसी सत्य को बाबा गुरु घासीदास जी ने धर्माचरण के रुप में स्वीकारा जो कि ज्ञात साहित्य मे पहला संत हैं जो सत्य–ज्ञान का बोध कराकर व्यवहारिक रुप में प्रतिष्ठत किया। जब सत्य को व्यवहार रुप में कोई अपनायेगा तभी उसके जीवन में सुख, शांति व समृध्दि स्थायी हो पायेगा।

सत का अर्थ होता है– प्रकृति का नियम, जो शाश्वत् है, चिरंतर है, अमर है, सर्व व्यापी व घट–घट वासी है, वही सत्य है। और नाम का अर्थ है– सत्य जिसका पहचान हो वही नाम है। अर्थात् सतनाम का अर्थ हुआ कि वह वस्तु, नियम, वाद जो प्रकृतिस्थ हो।[2] समस्त सृष्टि सत अर्थात संत शब्द से हुई है।[3] सतनाम कोई जाति, वर्ग, सम्प्रदाय नहीं वरन् एक पंथ है, व्यापक धर्म है जिसकी जरुरत आज संपूर्ण मानव जाति के लिए आवश्यक हो गया है, ताकि मानव जाति का सर्वांगीण विकास हो सके। इस तरह से सत्य ही सृष्टि का आधार है। यथा–

सत्य से धरती खड़े सत्य से खड़े अकास।
सत्य से चारो जुगा, कह गये घासीदास।।

सतनाम भाषा शास्त्रीय ध्वनि विज्ञान सम्मत स्वरुप है–
स, त, न, अ, म अर्थात सतनाम अतः सतनाम सर्वश्रेष्ठ है तथा सभी का मूल है।

1. स– साहस नाम, सार नाम, सत नाम।
2. त– तत् नाम ईश्वर के तीन नाम– ओम, तत्, सत।
3. न– निज नाम– नाद ब्रम्ह नवाकार महामंत्र।
4. अ– अक्षरनाम, अमृत नाम, अमर नाम।
5. म– महामंत्र सतनाम मंत्रमहामणि, मंत्र सम्राट।

पंचमहाभूत भी इसी में समाहित है– स– समीर, त–तेज अर्थात अग्नि, न– नीर, अ– आकाश, म– मही धरती।[4] सत्य आचरण के लिए दिखावा व आडम्बर से दूर रहना होगा। तथा इसे दिनचर्या में अपनाना होगा।

सत्य उद्घाटित पंथी गीत एवं नृत्य

सत मत का स्वरुप हम सतनामियों द्वारा गाये जाने वाला पंथी गीत व नृत्य में पाते हैं। जो गुरु आरती से प्रारंभ होकर सत महिमा बखान तथा प्रचार–प्रसार तक होता है। जिसमें सत्य सर्वत्र मिलता है–

1. गुरुआरती

सतनामी सत्य को अपने हृदय में बसाकर जीवन यापन करते हैं। तथा नितप्रति नाम स्मरण करते हैं। यथा–

पहली आरती जगमग जोति हो,
आरती होथे सतनाम साहेब के।[6]
मैं तो मनेमन आरती उतारव हो गुरु बाबा के
वो तो हिरदे म ध्याान लगाावव हो घासी बाबा के।[7]

2. जीवन चरित्र

गुरु–जन्म तथा इसका समाज पर प्रभाव का गीतों के माध्यम से गायन किया जाता है।

गिरौदपुरी म जनम लिहे गुरु मोर,
गिरौदपुरी म जनम लिहे न
महिमा ल गावॅव तोर, सुमिरन करव तोर।

3. पंथी गीत एवं नृत्य

गुरु–जयंती उत्साह के साथ महोत्सव के रुप में गली–गली, गॉव–गॉव तथा शहर–शहर में पंथी गीत व नृत्य के साथ गुरु अनुयायिओं द्वारा मनाया जाता है। इस गीत व नृत्य का मूल विषय सत्य का उद्घाटन व आत्म–शुध्दि के हेतु लोक हितार्थ प्रचार–प्रसार करना रहता है। जिसे पंथी नृत्य–दल गुरु महिमा का बखान मनोयोग पूर्वक प्रस्तुत करता है।

1. चलव जयंती मनाबो, गुरु दरसन पाबो
   संतो मंगल भजन गाबोन जुरमिल के।
2. जैतखाम ल गड़ाबोन, गुरु जयंती मनाबोन
   सत मारग म जाबोन, जुरमिल के।

गुरुजी के विचार को सूरबइहा गोरे लाल बर्मनपंथी लोकगीत कलाकार प्रचारित करते हैं–

मंदिरवा म का करे जइबो, अपन घट के ही देव ल मनइबो।[8]

गंगा स्नान, व्यर्थ पूजा पाठ, दिखावा जैसे आडम्बर के संदर्भ में पंथी गीत सम्राट दिलीप लहरिया कहते हैं कि–झनि जावौ गंगा गोदावरी संगी, चलवौ जाबोन हमुॅ मन गिरौदपुरी। तथा पं. शिवकुमार तिवारी ने स्पष्ट कहा है कि–

घट–घट म बसे हे सतनाम खोजे ल हंसा कहा पाबे रे।
तथा
अमरित हे, पबरित हे, पावन हे हो, गुरुजी के महिमा भारी हे।

पंथी गीत के माध्यम से बाबाजी के सतनाम संदेश को देश–विदेश तथा जन–जन तक प्रचार–प्रसार करने में प्रमुख भूमिका देवादास बंजारे, मानदास टण्डन, मंगत रवींन्द्र, समेबाई शास्त्री, उषा बारले, नवलदास मानिकपुरी, हेमदास कुर्रे, पं. शिवकुमार तिवारी,गरिमा दिवाकर, ममता कुलकर्णी, दिलीप डहरिया जैसे प्रतिभाशाली लोकगायक पूर्ण सर्मपण के साथ निरत हैं। जोकि आज के संदर्भ में गुरु घासीदास के विचारों के महत्व को स्वमेव सिध्द करता है। सत्य आचरण ही मानव के विकास का सर्वोत्तम मार्ग है।

4. सद् ग्रंथ वाचन

सतनाम के अनुयायी सत मार्ग में चलने के लिए सद् ग्रंथ उत्सव का आयोजन करता है। जिसे पंडित के द्वारा गीतात्मक तथा कथात्मक रुप में प्रवचन करते हैं। सद् ग्रंथ का प्रतिपाद्य सत्य का स्वरुप होता है। इसका समय दिन होता है।

सत्य के प्रतीक जैतखाम (pillar of truth/ satya ka stambh) जैत या जयत का अर्थ जीत/विजय का प्रतीक है। खंभ का अर्थ – खंम्भा या खाम होता है। इसकी बनावट निश्चित मानदण्ड पर आधारित है। जो पॉच हॉथ लम्बा–चौकोर आयताकार चबुतरा होता है। जिसमें सात सीढ़ी होता है। चबुतरा के बीच में इक्कीस हॉथ का गोल या सात कोर वाला लकड़ी खंभ होता है। उपर तीन गुजर लगा होता है। जिसमें बॉस का पॉच हॉथ का डन्डा लगा होता है। इसके उपर 2:3 आकार का सफेद रंग का झण्डा लगाया जाता है। यह असत्य पर सत्य के जीत या विजय का प्रतीक है। पाइथागोरस प्रमेय के अनुसार लम्बे और आधार के दुगनी दूरी पर व्यक्ति के दृष्टिकोण लगभग 21 हॉथ की बिन्दू पर ठीक पहुॅचती है। यह तथ्य गुरु घासीदास को वैज्ञानिक सोच के व्यक्तित्व वाला सिध्द करता है।[9]

चौका आरती

सतनाम पंथ के अनुयायी आचरण शुध्दि तथा सत्य के अनुसरण के लिए भजन संध्या का अपने घर, मुहल्ला या गॉव में आयोजन करते हैं। जिसे चौका आरती कहा जाता है। इस आरती में गुरु घासीदास जी का जीवन चित्रण तथा उपदेशों का गायन किया जाता है। तथा सतनाम को धर्म के रुप में धारण करने के लिए दृढ़ संकल्पित हो दीक्षित होते हैं जिसे जनेउ, कंठी, तथा सफेद वस्त्र हमेशा के लिए धारण करना होता है। ऐसा धारण कराने वाला को पंडित कहते हैं।

जो रात के लगभग दूसरा प्रहर आरती भजन से लेकरप्रातःकालगुरु उपदेश के प्रचार–प्रसार तक चलता है। शुभारंभ इस तरह आरती से होता है–

जेमा गुरु मिलन होय तोर
अॅगना ल झार बहार लेहव हो।
सादा के कपड़ा म तन ल सजाये संतो
कंठी जनेउ धरे जग ल देखाये संतो
नइतो पायेव मरम सोर
देव देवाला भटके मन माते संगी तोर
मया मोह मोटरी ल मुॅड़ धरे संगी मोर
कइसे तोर होहि ग उबार
धन दोगानी तोर छुट जाही इहॅा रे
सत सुमरले तै।य संग जाही उहॅा रे।[10]

फिर गुरु जन्म, महिमा, सत ज्ञान प्राप्ति तथा लोक कल्याण हेतु प्रचार प्रसार लगभग इस तरह से होता है–

वो तो महिमा देखाये गिरौदपुरी म
गुरुघासी मोर अमर होगे हो
बिन आगी पानी के जेवन बनाये हो
अधरे म धोती बाबा तेहा सुखाये हो
भाटा के बारी म मिरचा टोर लाये हो
मरे बछिया अउ सफुरा जिलाये हो
रुख–राई जीव–जन्तु रहे तोर बस म
सत अमरित बाबा रहे तोर सच म।[11]

चौका आरती पूर्ण होने के खुशी में प्रातः प्रसाद का वितरण किया जाता है। जो पान बीड़ा में पंच मेवा का बना होता है।

सामाजिक व्यवस्था

सतनामियों का समाज समतामूलक पर विश्वास करते हैं; तथा पद सोपान में बॅटा होता है। जिसका मुखिया गुरु घासीदास वंश के उत्तराधिकारी होता है। जिसे जगत गुरु तथा अन्य को गुरु परिवार कहा जाता है। इसके बाद क्रमशः राज महंत, भण्डारी, छड़ीदार का स्थान आता है। समाज में सबका अलग–अलग उत्तरदायित्व निर्धारित रहता है। जिसका विभाजन जगत गुरु करता है। सतनाम के अनुयायी सत्य को ईश्वर मानकर सत्य पर विजयके प्रतीक सफेद ध्वज फहराते हैं। गिरौदपुरी, भण्डार, खडुवा, तेलासी तथा अमरपुर में आज सतनामियों का पवित्र स्थान है। जहॅा विभन्न अवसर व तिथियों में मेला लगता है, महोत्सव मनाया जाता है। तथा अनुयायीगणइस दिन सत्य और पवित्रता के जैतखाम के पास पहुॅचकर सद्मार्ग में चलने का विचार को पुष्ट व संकल्पित करते हैं।

विश्व कुटुम्बकम् का मूल

आज सत्य के सहारे राज व समाज में व्याप्त जाति, वर्ग ,सम्प्रदाय, मत, मतांतर व धर्म तथा राजनैतिक विद्वश, नक्सलवाद जैसे बुराईयों का समूल उन्मूलन हो सकता है। जिससे विश्व–बंधुत्व के लिए मानववाद, प्राणि–मात्र के प्रति अहिंसा, दीन–दुखियों के प्रति सहानुभूति व करूणा, सेवा, त्याग गुणों का व्यक्ति व समाज में स्थापना हो सकेगा। गुरूजी ने सादा खान–पान, पहनावा–सादा अॅगरखा व धोती, खड़ाउॅ, जनेउ, कंठी धारण करने के लिए प्ररित किया। जिससे मन में सात्विक भाव जाग सके। और प्राणिमात्र के लिए करूणा, दया, अहिंसा, प्रेम उत्पन्न हो सके। जिससे समाज में व्याप्त छल–प्रपंच, झूठ–फरेबी से बच सके, और बाबा जी के सपनामानव मानव एक समान सकार हो सके। जो विश्व बंधुत्व का मूल है। इसके लिए बाबा जी ने आशीर्वाद दिया है कि–

1. सत्य ही ईश्वर है।
2. सृष्टि का मूल आधार सत्य है, अतः सभी सुखों का मूल सत्य है।
3. हिंसा, मॉस, मदिरा व व्यभिचार से बचना चाहिए।
4. सत्य के मार्ग पर चलकर ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव है।
5. सभी मत, दर्शन व धर्म का मूल सत्य है।
6. मानव मानव में भेद नहीं।
7. सत्य से ही परममुक्ति संभव है।13.

''सत से नाम बने सतनाम जीव सार
सतनाम धारण करत मिलय सुख अपार
छत्तीसगढ़ छॉव म घासीदास एक नाम
सहज मुक्ति पाओगे सुमरत सत गुरुनाम।''[14]

सत्य अखण्ड, अद्वितीय व अमर होता है इस पर देशकाल का प्रभाव नहीं पडता। इसीलिए मुण्डोकोपनिषद में 'सत्यमेव जयते' उल्लेखित है। कि सत्य से श्रेष्ठ और कुछ नहीं होता है। अतः सत्य ही ईश्वर है।और आज इसकीनितांत आवश्यकता है कि, समाज व देश में व्याप्त समसामयिक समस्याओं का समूल उन्मूलन हेतु सतपंथ से प्रेरणा लेकर मानव धर्म को स्वीकार किया जाय।

संदर्भ सूची

1. http//en.wikipidia.org/wiki/ghasidas
2. शानू , कृष्ण कन्हैया, सतनाम और सतनामी, सतनाम संदेश, पृ. 23/5, 2014
3. दिव्य, सत्यर्षि वेदानंद, मानव धर्म के प्रणेता से गुरुघासीदास सार्वभौम मानव धर्म की अवधारणा, सतनाम संदेश, पृ. 10/5, 2014
4. दिव्य, सत्यर्षि वेदानंद, मानव धर्म के प्रणेता से गुरुघासीदास सार्वभौम मानव धर्म की अवधारणा, सतनाम संदेश, पृ. 13/5, 2014
5. बर्मन, गोरेलाल, आडियो संग्रह, सतनाम संदेश, ध्वनि रिकार्डिग, रायपुर।
6. बर्मन, गोरेलाल, आडियो संग्रह, सतनाम संदेश, ध्वनि रिकार्डिग, रायपुर।
7. लहरे, प्रो राज कुमार, निरगुनिया मंगलम् प्रकाशन, दिल्ली 2016।
8. जोशी, कु. अंजली, लोक साहित्य के विविध आयाम, सतनाम संदेश, पृ. 21/5, 2014
9. लहरे,प्रो राज कुमार, निरगुनिया, मंगलम् प्रकाशन, दिल्ली पृ. 16, 2016
10. जगदेव, डॉ अरविंद, गुरु घासीदास और उनका 'जैतखाम', सतनाम संदेश, 30 –31/04, 2014
11. लहरे,प्रो राज कुमार, निरगुनिया, मंगलम् प्रकाशन, दिल्ली पृ. 20, 2016
12. लहरे,प्रो राज कुमार, निरगुनिया, मंगलम् प्रकाशन, दिल्ली पृ. 25, 2016
13. लहरे, प्रो राज कुमार, सत्य के सजग प्रहरी गुरु घासीदास जी, क्रांतिकारी संकेत, पृ. 04/2015 दिसम्बर, 18
14. लहरे, प्रो राज कुमार, निरगुनिया, मंगलम् प्रकाशन, दिल्ली, मुख पृष्ठ 2016